Original Research Paper | Arts | Volume : 07 | Issue : 02 | February 2022 | e-ISSN : 2456-5040

संगीत व सौन्दर्यशास्त्र

डॉ. मनीष डंगवाल

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर, चमोली ,उत्तराखंड

ABSTRACT

संगीत में प्रयुक्त ध्वनियां, विभिन्न मानसिक स्थितियों की भी सूचक होती है। यह केवल आनंदानुभूति ही नहीं होती, अपितु यह हमारे मनोभावों को भी प्रभावित करती हैं। संगीत हमारी आत्मा में भक्तिमय अनुभूतियां भर देता है तथा भक्ति भी एक प्रकार का आवेग है, जो हमारी आत्मा को प्रभावित करता है। यद्यपि स्थूल रूप से ललित कलाओं में भिन्नता स्पष्ट दिखाई देती है और है भी, परंतु एक धरातल ऐसा भी है जिस पर पहुंचकर सभी ललित कलाएं तात्विक दृष्टि से अंतःसंबद्ध और सामान सिद्ध होती हैं इस प्रकार किसी एक कला के भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य कला का सहारा लेना अंतः संबंध का सूचक है। भारतीय 'कला साहित्य' के अंतर्गत राग–माला चित्रों के द्वारा हमें संगीत की राग रागिनियों का चित्रात्मक दर्शन मिलता है। राग–माला के चित्रों में राग–रागिनी से संबद्ध वातावरण,दृश्य,विषय,रस, कला और भाव आदि का ऐसा व्यंजन चित्र रहता है की चित्र को देखने मात्र से राग अथवा रागिनी के रूप,प्रकृति और समय आदि का पूर्ण ज्ञान हो जाता है। यहां संगीत कला जिन दृश्य,अदृश्य सूक्षमताओं का विवेचन ध्वनि तथा लाय के द्वारा करती है उन्हें चित्रकला रंगरेखाओं के द्वारा, मूर्ति कला आकृतियों के द्वारा, काव्य कला काव्य के द्वारा व्यक्त करती है। अतः सौंदर्य शास्त्र केवल किसी एक क्षेत्र से नहीं अपितु सौंदर्य के संपूर्ण क्षेत्र से संबंधित है।

प्रस्तावनाः

सौंदर्य–शास्त्र की उत्पत्ति यूनान 'ग्रीक' से मानी जाती है तथा जिसका अर्थ 'संवेदनशील ऐंद्रीय बोध' के अर्थ में, 'ललित कलाओं के दर्शन' के अर्थ में, 'काव्य अथवा प्रकृति के सौंदर्य के विश्लेषण' के रूप में, 'इंद्रिय बोध से प्राप्त सौंदर्य भावना के आनंद' आदि के रूप में लिया जाता है।

अब यहां यह विचारणीय प्रश्न उत्पन्न होता है कि सौंदर्य शास्त्र, जिसकी उत्पत्ति ही यूनान से मानी जाती है, क्या भारत में नहीं था? इसका उत्तर यह है कि भारत का एक वर्ग सौंदर्य शास्त्र को एक स्वतंत्र शास्त्र मानने की अपेक्षा,काव्य–शास्त्र के ही अंतर्गत देखाता है। यह धारणा गलत है क्योंकि काव्यशास्त्र के निष्कर्ष केवल काव्य को लक्ष्य करके निकालने जाते हैं जबकि सौंदर्य–शास्त्र सभी ललित कलाओं के सर्वमान्य किंतु प्रधान तत्वों का आलोचक और विश्लेषण करता है। सौंदर्य शास्त्र का विषय, सौंदर्यानुभूति का संपूर्ण क्षेत्र है, ना की कोई एक सीमित क्षेत्र।

सौन्दर्यशास्त्र उत्पत्ति व अर्थः

हिन्दी भाषा का शब्द सौन्दर्यशास्त्रय जिसको अंग्रेजी में 'एस्थेटिक्स' कहा जाता हैय कि उत्पत्ति ग्रीक भाषा के 'एटोटिको' से हुई, जो बाद में 'एस्थेसिस' बनकर उपस्थित हुआ तथा यही शब्द बाद में एथेटिक्सश बन गया।

इस शब्द का अर्थ है 'ऐंद्रिय सुख की चेतना'।

सामान्यतः इसका प्रयोग काव्य अथवा प्रकृति के सौंदर्य के विश्लेषणात्मक रूप में होता था और फिर ललित कलाओं के तत्त्वों के सैद्धांतिक निरूपण और उसके आधार पर कलाकृतियों के मूल्यांकन के रूप में होने लगा। परन्तु अब सौंदर्यानुभूति का सम्पूर्ण क्षेत्र ही 'एस्थेटिक्स' का विषय बन गया है।

'दी फिलॉसफी ऑफ फाइन आर्ट' की भूमिका में होगेल ने सौंदर्य–शास्त्र पर विचार करते हुए यह कहा है कि, सौंदर्य–शास्त्र का सम्बन्ध सौंदर्य के सम्पूर्ण क्षेत्र से माना जा सकता है, किन्तु सही अर्थों में सौंदर्य शास्त्र का सम्बन्ध ललित कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त सौंदर्य–शास्त्र के साथ है, अन्य माध्यमों से अभिव्यक्त सौंदर्य के साथ नहीं। उनकी दृष्टि से सौंदर्य–शास्त्र ललित कलाओं का दर्शन है।

लैंगर ने अपने ग्रन्थ 'फिलिंग एण्ड फॉर्म' के 1353 ई. के संस्करण के बारहवें पृष्ठ पर एक प्रश्न उठाया है कि सौंदर्य–शास्त्र का सम्बन्ध कलाकार की अभिव्यक्ति से माना जाय अथवा उसके उत्पन्न होने वाले प्रभाव से ? कलाकार की दृष्टि से किसी कलाकृति का रचना–पक्ष अभिव्यक्ति है और पाठक या सहृदय मनुष्य की दृष्टि से कला का अध्ययन प्रभाव का अध्ययन है।

उन्होंने प्रभाव –पक्ष के विवेचन–विश्लेषण को ही सौंदर्य–शास्त्र का प्रधान विषय माना है। जबकि एक अन्य दार्शनिक कोचे ने अभिव्यक्ति के विवेचन को प्रधान विषय माना है।

कई विचारकों का एक वर्ग सौंदर्य शास्त्र को काव्यशास्त्र का पर्याय मानता है, किंतु काव्य–शास्त्र के निष्कर्ष केवल काव्य को लक्ष्य करके निकाले जाते हैं, जबकि सौंदर्य–शास्त्र सभी ललित कलाओं के सर्वमान्य किंतु प्रधान तत्त्वों का आलोचन और विश्लेषण करता है।

अतः सौंदर्य–शास्त्र के अध्ययन से निम्नलिखित बातें प्रमुख संबंध रखती हैं–

1. ऐंद्रिय बोध से प्राप्त सौंदर्य–भाव के मनोमय आनन्द का विश्लेषण सौंदर्य–शास्त्र करता है।
2. केवल ललित कलाओं के माध्यम से अभिव्यक्त सौंदर्य के साथ ही सौंदर्य–शास्त्र का संबंध है। अन्य माध्यमों से जो सौंदर्य अभिव्यक्त होता है उसके साथ नहीं।
3. प्रायः सभी ललित कलाओं को दृष्टि में रखकर सौंदर्य–शास्त्र के

Copyright© 2022, IEASRJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

निष्कर्ष निकाले जाते हैं, जबकि काव्य–शास्त्र के निष्कर्ष केवल काव्य को ध्यान में रखकर निकाले जाते हैं।

4. अवश्य ही मनोविज्ञान के कुछ तत्वों की सहायता से सौंदर्य–शास्त्र के कुछ सूत्रों की विवेचना होती है, परंतु मनोविज्ञान सौंदर्य शास्त्र की सीमा नहीं है।

ललित कलाओं का तात्त्विक अंतःसंबंध

इस प्रकार किसी एक कला के भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य कलाओं का सहारा लेना अंतः संबंध का सूचक है। भारतीय कला (चित्रकला) साहित्य के अंतर्गत 'रागमाला' चित्रों के द्वारा हमें संगीत की राग–रागनियों का चित्रात्मक दर्शन मिलता है।यहाँ संगीत–कला जिन दृश्य–अदृश्य सूक्ष्मताओं का विवेचन ध्वनि तथा लय के द्वारा करती है, उन्हें चित्र–कला रंग–रेखाओं के द्वारा व्यक्त करती है।

'रागमाला' के चित्रों में राग–रागनियों से संबद्ध वातावरण, दृश्य, विषय, रस, काल और भाव आदि का ऐसा व्यंजक चित्र रहता है कि चित्र को देखने–मात्र से ही राग अथवा रागिनी के स्वरूप, प्रकृति, रस और समय आदि का पूर्ण ज्ञान हो जाता है।

संगीत व अन्य ललित कलाओं का अंतर संबंध

- **संगीत–कला और मूर्ति–कला–** अनेक नृत्य–मुद्राओं को दक्षिण के मंदिरों में, अनेक गुफाओं में उत्कीर्ण प्रतिमाओं के बीच तथा विभिन्न स्तूपों एवं धार्मिक प्रांगणों में स्पष्टतः देखा जा सकता है। इससे इन संगीत व नित्य के मध्य तात्त्विक अंतः संबंध भी स्पष्ट दिखाई देता है।
- **काव्य और चित्र–कलाः** लगभग 1450 ई० से कृष्ण–काव्य के उत्कृष्ट भावों को चित्र–कला में उपस्थित करने की श्रृंखला सी चल पड़ी है। अतः यह कहना गलत नहीं है कि भारतीय साहित्य के काव्य में वर्णित राधा–कृष्ण ने, चित्र–कला के राधा–कृष्ण को प्रभावित किया है।

प्रसिद्ध ग्रंथ 'उमरखयाम' का तो सारा काव्य ही चित्रमय हो गया है। रामचन्द्र शुक्ल 'चितामणि' के प्रथम भाग के पृष्ठ 176–10 पर लिखते हैं कि, श्काव्य एक बहुत ही व्यापक कला है। जिस पर मूर्त विध ाान के लिए कविता, चित्र–विद्या की प्रणाली का अनुसरण करती है, उसी प्रकार नाद–सौष्ठव के लिए वह संगीत का कुछ–कुछ सहारा लेती है। नाद–सौंदर्य कविता की आयु बढ़ाता है। अतः नाद–सौंदर्य का योग भी कविता का पूर्ण रूप खड़ा करने के लिए कुछ–न–कुछ आवश्यक होता है।'

ये सभी कलाएँ एक–दूसरे की पूरक हैं। काव्य, अभिनय, नृत्य और संगीत का सह–अस्तित्व भारत में देखा जा सकता है। इनका सह–अस्तित्व सौंदर्य–बोध को समृद्ध करता है। वह कलाजन्य आनन्द में बाधक नहीं होता।

- **चित्र–कला और मूति–कलाः** मूर्ति–कला की भाँति चित्रकला भी आँखों द्वारा ग्रहण की जाकर प्रभाव उत्पन्न करती है और एक दृश्य–कला है। अतः दोनों का तात्त्विक अंतः–संबंध उतना ही स्पष्ट है, जितना कि काव्य और संगीत का ।
- **संगीत और स्थापत्य–कलाः** होगेल ने स्थापत्य कला को 'फ्रोजिन म्यूजिक' (जमा हुआ संगीत) कहा है, क्योंकि यद्यपि संगीत श्रव्य कला है और वह कुछ विचारकों की दृष्टि से एक सूक्ष्म कला भी है तथा स्थापत्य कला दृश्य–कला है और सर्वाधिक स्थूल कला है, फिर भी इन दोनों में तात्त्विक अंतःसंबंध अक्षुण्ण है, इन दोनों कलाओं में जो अंतःसबंध है, वह उपेक्षणीय नहीं है।

स्थापत्य कला की सबसे बड़ी विशेषता यह है, कि इसमें संबंध–संगति रहती है और अन्य ललित कलाओं की अपेक्षा इसमें संतुलन, परंपराश्रित संयोजन एवं विनियुक्त उपादानों का घनत्व अधिक मिलता है। अपनी उत्कृष्टता हेतु संगीत कला भी, स्थापत्य कला के उक्त तत्वों को स्वीकार करती है। संगीत–कला के क्षेत्र में हमें रागों के शास्त्रीय विवरणों आदि के बीच स्वर–संतुलन, स्वरों का आरोह–अवरोह के रूप में परस्पराश्रित संयोजन और स्वर–संवाद की घनता का सचेष्ट निर्वाह मिलता है। इस प्रकार जहाँ संगीत में यह सम्बन्ध–संगति स्वरों के विधान पर निर्भर करती है, वहां स्थापत्य में यह संबंध–संगति स्थान–संबंधी अंतराल, दीवारों की पंक्तिबद्धता और स्थल द्रव्यों के भार या चाप पर कायम रहती है। अतः हीगल का मत है कि संगीत और स्थापत्य में समानता है।

महान दार्शनिक शोपेनहावर के अनुसार किसी भी वस्तु का मानसिक बोध कराने में अन्य कलाएं एक–एक क्षण को व्यक्त करती है, फिर भी उसे संपूर्ण रूप में व्यक्त नहीं कर पाती।

जबकि संगीत–कला अन्य कलाओं की तरह मानसिक बोध कराने की अनुकृति नहीं करती, बल्कि वह स्वयं की इच्छा की अनुकृति करती है और यह बोध कराने की क्रिया इसी की छाया है। वे शिल्प कला, स्थापत्य कला एवं चित्रकला से काव्य कला को उच्च कल मानते हैं, किंतु संगीत को वह कलाओं का सरताज मानते हैं।

संगीत के सशक्त प्रभाव का यही कारण है कि वह स्वयं असली तत्व की अभिव्यक्ति करता है। संगीत कला किसी विशेष या सीमित आनंद, सुख–दुख,पीड़ा,भय, शांति या प्रसन्नता को व्यक्त नहीं करती, बल्कि वह उनके सामान्य और सार्वभौमिक स्वरूप को अभिव्यक्ति देती है। जहां अन्य कलाएं किसी कल्पना अथवा किसी वस्तु के बाहरी स्वरूप का चित्रण करती है, वहां संगीत व संगीतकार जगत की आंतरिक प्रकृति का उद्घाटन करते हैं। वह अपनी भाषा व संगीतिक अभिव्यक्ति से गहनतम ज्ञान की अभिव्यक्ति करता हैं, जिसे समझने में बुद्धि असफल रहती हैं।

मनुष्य की क्रियाएं गत्यात्मक होती हैं तथा संगीत में भी एक गती है। दोनों में सम्यता होने के कारण मात्र ही, ध्वनिमय राग–रागिनीया हमारी आत्मा को प्रभावित कर लेती है। बच्चे जन्म से ही इन ध्वनियों से प्रभावित हो जाते हैं, अतः यह कहना उचित है कि संगीत अथवा संगीतमय ध्वनियां प्राकृतिक गति है। प्राकृतिक होने के कारण यह गति हमें आनन्दानुभूति कराती है। आनंद का एक कारण यह भी है कि राग और लय में नियमितता होती है। क्योंकि असंतुलन में संतुलन और अव्यवस्था में व्यवस्था और असामंजस्य में सामंजस्य लाने की अपेक्षा नियमितता या संयम से हम अधिक प्रभावित होते हैं। अनियमित

और स्थिर ध्वनि ना तो लालित्य लाती है ना प्रभावित करती है। अतः स्वर और लय का संयम और सामंजस्य ही कला में लालित्य लाता है और चित्त को प्रभावित करके आनंदानुभूति प्रदान करता है।

संदर्भ–सूची

1. सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व,डॉ. कुमार विमल ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1977
2. सौन्दर्यशास्त्र,डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा ,हिंदी ग्रंथ अकादमी 1998
3. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र,डॉ. निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन 2007
4. भारतीय संगीत का सौन्दर्यशास्त्र, डॉ. अशोक कुमार, कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली 2012
5. संगीत और सौन्दर्य, डॉ. प्रेमलता शर्मा ,संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली 1998
6. संगीत दर्शन, आचार्य बृहस्पति, राजकमल प्रकाशन 1989
7. भारतीय संगीत का इतिहास एवं सौन्दर्य, डॉ. भगवतशरण शर्मा, कनिष्क पब्लिशर्स 2005
8. भारतीय संगीत का सौन्दर्य पक्ष, डॉ. सुनीता शर्मा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2010
9. संगीत शास्त्र एवं सौन्दर्य बोध, डॉ. उमा मिश्रा, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी 2015
10. सौन्दर्यशास्त्र और कला–दर्शन, डॉ. रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन 2003